आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 2/जून 2024
Received: 02/05/2024; Accepted: 14/06/2024; Published: 26/06/2024

वाजिद के काव्य पर ओशो का चिंतन

- गुलाब सिंह
हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय
ई-मेल: singhgulab267@gmail.com
मोबाइल. 8745981020

गुलाब सिंह, **वाजिद के काव्य पर ओशो का चिंतन**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 2/जून 2024,(105-113)

शोध सार: वाजिद दादूदयाल के समर्थ शिष्यों में एक हैं। इनपर हिंदी आलोचना में बहुत कम लिखा गया है। ओशो ने इनके काव्य की जो व्याख्या की है उसे ठीक उसी अर्थों में समझने कि कोशिश लगती है। एक संत जो कहता है उसे समझने के लिए भी अनुभव का एक अलग संसार है, और ओशो उस संसार के वासिंदे हैं। उनकी व्याख्या वाजिद को समझने में सहायक हो सकतीं हैं। उसी को विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है।

बीज शब्द: वाजिद, अध्यात्म, साहित्य, ओशो, व्याख्या, भाव, समझ, ध्यान, प्रेम, परमात्मा ।

मूल आलेख: वाजिद का जिक्र हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में नहीं मिलता। रामचन्द्र शुक्ल, रामकुमार वर्मा, गणपति चंद्र गुप्त, राम स्वरूप चतुर्वेदी, डॉ. नगेन्द्र बच्चन सिंह आदि किसी भी साहित्येतिहास ग्रंथ के लेखक ने वाजिद के संबंध में कोई सूचना नहीं दी है।

वाजिद के कुल 14 ग्रंथों के नाम लिए जाते है। वाजिद के कुछ पदों को वियोगी हरि ने " संत-सुधा सार" पुस्तक में संकलित किया है। इसमे – सुमरण कौ अंग (2 पद), विरह कौ अंग (13 पद), पतिव्रता कौ अंग (3 पद), उपदेस कौ अंग (8 पद), चिंतामणि कौ अंग (8 पद), काल कौ अंग (3 पद), विश्वास कौ अंग (3 पद), दातव्य कौ अंग (7 पद), दया कौ अंग (2 पद), अज्ञान कौ अंग (2 पद), उपजण कौ अंग (1 पद), जरण कौ अंग (2 पद), भेष कौ अंग (1 पद), और साध कौ अंग (1 पद)। कुल 56 पद संकलित हैं जिसमें से 36 पदों की व्याख्या ओशो ने की है।

ओशो ने वाजिद के पदों को आधार बनाकर 1978 ई. में 21 से 30 सितम्बर तक व्याख्यान दिए हैं 10; जो ‘कहै वाजिद पुकार पुस्तक में संग्रहित 'हैं। इसमें पाँच व्याख्यान वाजिद के पदों को आधार बनाकर दिया गया है,– 1. पंछी एक संदेश कहौ उस पीव सूं 2. पीव बस्या परदेस 3. साधां सेती नेह लगे तो लाइए 4. हंसा जाय अकेला और 5. सतगुरु शरणे आयक तामस त्यागिए। हमारे विवेचन और विश्लेषण हेतु यही व्याख्यान महत्वपूर्ण हैं। बाकि पाँच व्याख्यान- 1. प्रार्थना के पंखयात्रा - शून्य शिखरों की 2. सहज सोपान मुक्ति मंदिर का 3. उतर आए अग्निपंखी सत्संगसर के तीर - 4. कुछ और ही मुकाम मेरी बंदगी का है और 5. चाँदनी को छू लिया है। इन व्याख्यानों में उनके शिष्यों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर हैं।

ओशो ने जिन पदों की व्याख्या की है उसके चयन में कोई निश्चित योजना का भान नहीं होता। ओशो ने वाजिद के संबंध में और उनके पदों के संबंध में जो कुछ कहा है वह वाजिद को समझने की दिशा में हमारा मार्गदर्शक बन सकता है।

वाजिद एक संत हैं और संतों का कहा बहुत कुछ ऐसा है जो सामान्य जन के अनुभव की बात नहीं है। उनके अन्दर अदृश्य के प्रति जो विरह की स्थिति है उसे समझने केलिए ओशो जैसे व्यक्तियों के पास से ही थोड़ी आस है। वाजिद के पदों की जो व्याख्या ओशो ने प्रस्तुत की है वह हमारी को नये आयाम में ले जाने का 'चेतना' प्रयास लगती हैं।

वाजिद के संबंध में हमें बहुत कम जानकारी मिलती है। वे पठान थे तथा दादूदयाल के शिष्य थे। जब व्यक्ति को उस प्रभु के होने की एक झलक मिल जाती है तो व्यक्ति अपना सबकुछ दाव पर लगा आगे की यात्रा पर निकल पड़ता है। वाज़िद के साथ भी एक दिन कुछ ऐसा ही घटा। वे शिकार करने केलिए जंगल गये थे। सामने हिरण पाकर अपना तीर साधा लेकिन हिरण पर तीर चला नहीं सके। वियोगी हरि लिखते हैं- "जंगल में एक हिरणी पर तीर चलाने ही वाले थे कि इनके हृदय से करुणा का निर्झर फूट पड़ा।"[1] मतलब करुणा से भर कर तीर नहीं चलाया। ओशो कहते हैंलेकिन वह जो जीवन की छलाँग देखी ,चले थे मारने" -- वह जो हिरणी में भागता हुआ , जागा हुआ चंचल जीवन देखावह जो बिजली जैसी कौंध गई जीवन की। अवाक रह गए। यह जीवन नष्ट करने - इसी जीवन में परमात्मा छिपा ,को तो नहीं है।"[2] वियोगी हरि की व्याख्या भावात्मक है उन्हें भावों के क्रिया प्रतिक्रिया का बोध है। वह जानते हैं करुणा में इंसान हिंसा नहीं कर सकता। ओशो की भी भावात्मक समझ कच्ची नहीं है लेकिन जो घटना जिस रूप में घटित हुई हो उसकी वैसी व्याख्या करना ही उचित है। ओशो की व्याख्या अध्यात्मिक है। शिकार के वक्त जो बोध घटित हुआ वह हमारे अनुभव से अलग आयाम की सूचना देता है क्योंकि वाजिद इस घटना के बाद गुरु की तलाश में निकल पड़े। अगर उपर्युक्त घटना करुणावश घटती तो वह हिंसा छोड़ते न की संतों की तलाश में भटकते। संत या गुरु की खोज एक ऐसे व्यक्ति की तलाश है जो उस घटित

---

[1] हरि, वियोगी, संत सुधा सार,उद्योगशाला प्रेस, संस्करण 1953, पृष्ठ संख्या 552

[2] ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 3

घटनाप्राप्य नवीन अनुभव , को समझा सके। हिरण की छ्'लाँगने वाज़िद के अंदर ' बिजली सी कौंध पैदा की। कुछ ऐसा दिख गया जिसके लिए जीवन दाव पर लगाया जा सकता है। गुरु की तलाश शुरू की वाजिद ने और दादू की खोज के साथ उनकी यह यात्रा रुकी।

वाजिद के संबंध में राघोदास का एक कवित्त मिलता है। जिसे स्वामी मंगल दास ने अपने 'पंचामृत' ग्रन्थ में संकलित किया है। कवित्त कुछ इस प्रकार है-

छाड़िकै पठान-कुल रामनाम कीन्हों पाठ,

भजन प्रताप सूं वाजिद बाजी जीत्यौ है।

हिरणी हतत उर डर भयो भयकारि,

सीलभाव उपज्यो दुसीलभाव बीत्यो है।

तोरे है कवांणतीर चाणक दियो शरीर,

दादूजी दयाल गुरु अंतर उदीत्यौ है।

राघो रति रात दिन देह दिल मालिक सूं,

खालिक सूं खेल्यो जैसे खेलण की रीत्यौ है।[3]

अर्थात पठान का कुल छोड़कर रामनाम का पाठ करके भजन के प्रताप से वाजिद ने बाजी जीत ली। ,हिरण को मारने में हृदय में भयंकर डर छा गया । उनके अन्दर शील भाव ने जन्म लिया और दुशील भाव विदा हुआ। तीर धनुष तोड़ दिया और खुद को गुरु के हवाले कर दिया। गुरु दादू ने वाजिद के अंतर को प्रकाशित कर दिया। वाजिद रात दिन मानो मालिक संग रति में निमग्न रहने लगे। ईश्वर (मालिक) संग वैसे खेला जैसा खेल खेलने की रीति है।

ओशो ने इस पद की व्याख्या से पूर्व कहाराघोदास के इन वचनों" - में कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं जो समझने जैसी , हैं। कुछ गलत बातें भी हैं"ताकि वे छोड़ी जा सकें। ,वे समझ लेने जैसी हैं ,[4] धर्म और अध्यात्म में ओशो की गति अच्छी है इस कारण उससे जुड़ी बात को उसी संदर्भ में परिभाषित कर पाने की उनकी क्षमता विरल है।

राघोदास की उपर्युक्त पंक्तियों में कौन सी बातें ओशो को गलत लगती हैं और क्यों? "छाड़िकै पठान कुल रामनाम कीन्हों पाठ" इस पद की व्याख्या में ओशो राघोदास की उस मनोवृति की ओर इशारा करते हैं जो

---

[3] हरि, वियोगी, संत सुधा सार,उद्योगशाला प्रेस, संस्करण 1953, पृष्ठ संख्या 552

[4] ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 7

अपने और पराए के भेद से निर्मित होती है। धार्मिक श्रेष्ठता, क्षेत्रीय श्रेष्ठता, भाषाई श्रेष्ठता इसके उदाहरण हैं। ओशो कहते हैं धर्म तो एक ही है। जिसे छोड़ा नहीं जा सकता। "न जिसको हम पकड़ सकते हैं, न छोड़ सकते हैं- उस स्वभाव का नाम धर्म है।"[5]

जब भी कोई व्यक्ति धर्म परिवर्तन करता है तो जिस धर्म को छोड़ता है उसके लोग उस व्यक्ति को बेईमान , ,धोखेबाज़ गद्दार आदि कहते हैं, और जिस नये धर्म को स्वीकार करता है उनके लोग उस व्यक्ति को महाज्ञानी , सत्य की पहचान हुई आदि ,बोध हुआ कहते हैं। यह एक साम्प्रदायिक दृष्टि है। राघोदास में भी इसी की झलक दिखाई पड़ रही है। यह किसी घटना की ठीक व्याख्या नहीं इसमें तथ्य तो है अपितु सत्य नहीं। तथ्यात्मक रूप से राघोदास की बात सही है लेकिन बोध की दृष्टी से इसका कोई खास अर्थ नहीं है। एक पंक्ति और है-

“हिरणी हनन उर डर भयो भयकारी,

सीलभाव उपज्यो दुसील भाव बीत्यो है।

अर्थात् हिरण को मारते वक्त वाजिद भयभीत हो गए। ओशो कहते हैं यहाँ फिर भूल हो गई। हरिण को तीर " भयभीत नहीं हो ,उठाकर मारने चले थे गए बल्कि प्रेम से भर गए। वह जो जीवन की लपट देखीवह जो जीवन , "उसके प्रति प्रेम से भर गए। ,हिरण की आँखों में और छलाँग में परमात्मा का रूप देखा वह जो ,की तरंग देखी[6] वाजिद के संबंध में घटित यह घटना करुणा या भय का परिणाम नहीं है यह बात स्पष्टत: दृष्टिगोचर है। इसकी प्रेरणा गहरी है जिसकी विवेचना ओशो ठीक कर रहे हैं। राघोदास कहते हैं यह जो भय हुआ इससे सीलभाव उपजा पाप छूट गया)कौर दुसील भाव बीता (पुण्य का उदय हुआ))। कानून और शासन के भय से पाप का छूटना सामाजिक दुनिया में तो ठीक है किन्तु धर्म के आयाम में यह गलत व्याख्या है।

ओशो ने वाजिद के जिन पदों को व्याख्या के लिए चुना है उसमें सर्वाधिक पद 'रह कौ अंगवि"(9 पद) के हैं और दूसरे स्थान पर 'उपदेस कौ अंग'(8 पद) के पद हैं। एक व्याख्यान में कई अंगों के पदों की व्याख्या की गई है जिसमें किसी ढंग की भावगत समानता को ढूँढने का उपक्रम व्यर्थ है। पदों की व्याख्या करने में ओशो ने इनके अर्थ को आध्यात्मिक आयाम दिया है। ओशो संतों के पदों की व्याख्या के क्रम में हमेशा इस बात कि ओर ईशारा करते हैं कि इनको पढ़ने के क्रम में भाषा पर मत जाना भाव पर जाना। हैं। वही " संतों का काव्य है।"[7] महती संत कवियों को समझने केलिए ओशो का यह कथन सूत्र की तरह है।

---

[5] ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 7

[6] ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 9

[7] ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 7

साहित्य के विद्यार्थी के नाते हमारा भाषा की ओर दृष्टि जाना स्वाभाविक है लेकिन कुछ बातों को नियम तोड़कर भी ग्रहण करना चाहिए। संतो के पदों के संबंध में यह बात विशेष तौर पर ध्यान रखने के योग्य है।

“जब वाजिद का दिया जलातो उसके भीतर से काव्य फूटा। , सीधा सादा-आदमी उसकी कविता ,भी सीधी सादी हैग्राम्य , है। पर गाँव की सोंधी सुगंध भी है उसमें। जैसे नई नई वर्षा हो और भूमि से सौंधी सुन्ध उठे , ठीक ऐसी सोंधी सुगंध है वाज़िद के काव्य में। मात्रा"जरूरत भी नहीं है। ;छन्द का हिसाब नहीं है बहुत- ओशो ने ‘मिट्टी की सोंधी सुगंध’ से वाजिद के काव्य की तुलना की। क्या खास है मिट्टी की सुगंध में? खास है मिट्टी की सुगन्ध का वह गुण जो मन को आनंद से भर देती है। हर मनुष्य इस सुगंध को अपने नासापुटों में भर लेना चाहता है। इस सुगन्ध को आप नजरअंदाज नहीं कर सकते। ऐसा ही वाजिद का काव्य है जिसे एकबार समझते हुए अगर पढ़ लिया तो काव्य के अर्थ की सुगन्ध से नहीं निकल सकते।

उपमान भी वाजिद के पास सीधे सादे हैं लेकिन एक गहन अर्थ को समझाने में सक्षम है। वाज़िद के काव्य प्रतीकों को देखें-

"हस्ती के असवार न कुकर खाहिंगे", "कमल गया कुमलाय कल्यां भी जायसी "

जो हाँथी पर चढ़ा है उसे कुते के काटने का भय नहीं रहता। हमारी चेतना की ऊँचाई जितनी बढ़ने लगती है हमारी सारी एषणाएँमहत्वकाक्षाएँ सब ,तृष्णाएँ , छोटी पड़ जाती हैं वह हमारा कोई नुकसान नहीं कर पातीं। जो सांसारिक एषणाएँ पहचान में आ गई जो खिली ,अर्थात् प्रकट इच्छाएँ, महत्वकाक्षाएँ थी वह पकड़ में आने पर अब नहीं रहीं, वे सब छूट गईं लेकिन जो बातें हमारे संज्ञान में नहीं हैं, कहीं भीतर दबी पड़ी हैं, अभी कलियाँ हैं- फूल नहीं बनी; वह भी कुम्हला जाएँगी, वह भी छूट जाएँगी।

इन साधारण से दिखाई पड़ते प्रतीकों में जिन गहन बातों का उद्घाटन वाज़िद के यहाँ है वह संतों के यहाँ ही दृश्यमान है अन्यत्र नहीं। गहन बात बनाकर कहने का प्रयास नहीं है अपितु बात ही गहन है जिसके प्रकटीकरण केलिए इन प्रतीकों को चुना है वाजिद ने

'पंछी एक संदेश कहो उस पीव सूं' प्रवचन के अन्त में ओशो कहते हैं- "वाजिद के वचन प्रेम के बचन है। इनमें पांडित्य नहीं है, पर प्रेम की बाढ़ है। डूबना, डूबकी मारना; जितने गहरे जाओगे उतने मोती पाओगे।"[8]

मतलब वाजिद के पदों की प्रेरणा प्रेम है। यह प्रेम परमात्मा के प्रति है। वाजिद के पदों को समझने की पात्रता भी प्रेम से भरा हुआ हृदय ही है। संतों के काव्य को पढ़ने के क्रम में (मस्तिष्क) समझने के यत्न के क्रम में विचार , को पीछे ढकेलना होगा और हृदय तक उन बातों को जाने देना होगा। वाज़िद के पदों को समझने केलिए भी यह बात उतनी ही जरूरी है।

---

[8] ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 26

'पीव बस्या परदेशप्रवचन में पद की व्याख्या ' से पूर्व कहा -आज के सूत्र विरह वाजिद के" की रात्रि के सूत्र हैं। खूब मनपूर्वक उन्हें समझना।" [9]

वाजिद कहते हैं:

हरिजन बैठा होय तहां चल जाइए
हिरदै उपजै ग्यान रामगुण गाइए।

हरिजन के पास बैठने से हृदय में ज्ञान उपजता है। ओशो के यहाँ हरिजन का अर्थ वही है, जिस अर्थ में संत प्रयोग में लाते हैं। और 'हरिजन''ब्राह्मण' दोनों समानार्थी शब्द हैं। दोनों शब्दों के अर्थ की छवि एक सी है। ओशो शब्दों के प्रयोग के प्रति बहुत सतर्क हैं। वो जिस भी शब्द का प्रयोग करते हैं उसके गलत समझे जाने के प्रति भी सतर्क हैं। शब्दों में निहित उसके अर्थ को बचाने के क्रम में ओशो कहते हैं- "हरिजन' बड़ा बहुमूल्य शब्द है; इसे मत लथेड़ो! हाँ अछूत मिटाना चाहिए, एक बीमारी को दूसरी बिमारी से नहीं मिटाया जा सकता, और एक अतिशयोक्ति को दूसरी अतिशयोक्ति से नहीं मिटाया जा सकता । न तो ब्राह्मण ब्राह्मण है, न हरिजन हरिजन है। दोनों आदमी हैं। ब्राह्मण से ब्राह्मण शब्द छीन लो, हरिजन से हरिजन शब्द छीन लो। दोनों को आदमी रहने दो। हाँ जिस दिन वे जागेंगे और परमात्मा को जानेंगे, उस दिन फिर उनको ब्राह्मण कहो या हरिजन कहो, एक ही अर्थ होता है।

'साधां सेती नेह लगे तो लाइए' प्रवचन के प्रारंभिक उद्‌गार हैं- एक एक" शब्द बहुमूल्य है। हीरों में तौला जाए ऐसा।"[10]

'हंसा जाय अकेलाप्रवचन ' में ओशो वाजिद के काव्य में 'दुर्भाग्य में सौभाग्य' और ईश्वर के प्रति अनुग्रह का जो भाव निहित है उसे उद्‌घाटित करते हैं। ओशों के व्याख्यानों की विशेषताओं में दो बाते विशेषतउल्लेखनीय है :। एक वे अपने वक्तव्यों से हमारे विचारों की कटौती करना चाहते हैं। दूसरा उसे पढ़कर वैराग्य की मनः (अहंकार) स्थिति निर्मित होती है। वाजिद के पदों में उसी वैराग्य की उपस्थिति है जो हमें सचेत करता है; इस आपाधापी की दुनिया में थोड़ा ठहरकर विचार करने को कहता है।

"हरि, हाँ वाजिद, देखै सब परिवार अकेला जाय रे।"

---

[9] ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 57

[10] ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 105

और जब चलने की बेला आती है तो कोई भी साथी और संगीपरिवार साथ नहीं जाता। जिनको अपना माना , सोचा था कि साथ देंगें, सभी जीवन के संगी हैंमृत्यु में हम सब अकेले हैं। वहाँ हमारा कोई साथी नहीं। पद देखें , - से है "दातव्य कौ अंग"जो

भूखो दुर्बल देखि नाहिं मुँह मोड़िए

जो हरि सारी देय तो आधी तोड़िए

दे आधी की आध अरथ की कौर रे

हरि हाँ अन्न सरीखा पुन्य नाहिं कोई और रे।

इसेमें 'भूखों और दुर्बल' को थोड़ा दान देने की बात वाजिद कर रहे हैं। ओशो ने इसे एक अलग आयाम देते हुए कहा- "इसलिए मैं तुमसे यह नहीं कहता कि तुम जाऔ और लोगों की सेवा में लग जाओ। पहले तो मैं कहता हूँ तुम जागो । पहले वह जो रोटी, जिसकी बात कर रहे हैं वाजिद, तुम्हारे भीतर तुम्हारे हाथ तो लग जाए, फिर तुम बाँट लेना - आधी बाँटना, पूरी बाँटना ।"[11] मतलब साधारण दान देने के पदों की भी आध्यात्मिक व्याख्या! पर क्या इस तरीके की व्याख्या उचित है? हाँ, उचित इन अर्थों में है कि इससे काव्य की अर्थवत्ता का उत्कर्ष हो रहा है अपकर्ष नहीं। इन अर्थों में यह व्याख्या सराहनीय है। लेकिन इस बात की भी सूचना मिलती है कि ओशो ने पदों को अपने लक्ष्य के अनुरुप व्याख्यायित किया है।

'सद्गुरू शरण आयक तामस त्यागिए' प्रवचन में भी ओशो ने वही काम किया है। 'दान' शब्द की व्याख्या को एक अलग ही आयाम ओशो ने दिया है। दान का अर्थ हम किसी वस्तु के दान से लेते हैं लेकिन ओशो के यहाँ दान की एक नवीन व्याख्या दिखाई पड़ेगी। ओशो कहते हैं- "जो व्यक्ति सुख में जी रहा है, शांति में जी रहा है, ध्यान में जी रहा है, वह कुछ भी न करे, तो उसका जीवन दान है। और जो व्यक्ति दुख में जी रहा है, अशांति में जी रहा है, वह कितना ही दान करे, तो भी उसको जीवन दान नहीं है।"

यहाँ दान का अर्थ थोड़ा सूक्ष्म है। यहाँ दान मूर्त से अमूर्त की दिशा में यात्रा करता है। भाषा में इसे जीवन ऊर्जा के रूप में समझा जा सकता है। हर व्यक्ति कि एक उर्जा है। जो व्यक्ति शांत है उसकी ऊर्जा जगती में सकारात्मक रूप में प्रवाहमान है। मतलब सकारात्मक ऊर्जा की निर्मिति में आनंद में जी रहे व्यक्ति का भी योगदान है।

---

[11] ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 185

साधारणत: सादगी को समृद्धि का विपरीत समझा जाता है। लेकिन सादगी को अभाव के साथ ही क्यों जोड़ा जाए? उसे समृद्धि के साथ क्यों न जोड़ा जाए? ओशो कहते हैं -"मैं कोई कारण नहीं देखता कि समृद्धि सादगी के विपरीत है। समृद्धि की भी एक सादगी होती है, सादगी की भी एक समृद्धि होती है।"[12] सादगी के अर्थ का शीर्षासन करवाकर भी ओशो ने फिर वही कार्य किया- अर्थोत्कर्ष। उनकी पूरी योजना मानव को गरिमा देने की रही है। उन्होंने संन्यास, ध्यान, धर्म, प्रेम, दान, सबको एक अलग अर्थवत्ता के साथ जोड़ा। ओशो ने अंतिम व्याख्यान में कहा- "वाजिद का पाठ, वाजिद की सीख दो शब्दों की है- अंत में उन दो शब्दों को याद रखना - एक है शून्य एक है प्रेम। भीतर शून्य हो जाओ बाहर प्रेम हो जाओ, शेष सब अपने आप सध जाएगा।"[13]ओशो ने वाजिद के कुल 36 पदों को आधार बनाकर प्रवचन दिया और निष्कर्ष रूप में सिर्फ दो शब्द- ‘शून्य’ और ‘प्रेम’ को वाजिद की कुल सीख कहा है।वाजिद के विरह में जलते पदों और उपदेशों के बीच जो मूल प्रेरणा काम कर रही है वह वस्तुतः ओशो के इस निष्कर्ष से भिन्न नहीं है।

एक संत ध्यान को उपलब्ध होता है तो प्रेम से भर जाता है, जब कोई प्रेम से भरकर इस सृष्टी को देखता है तो धीमे धीमे ध्यान भी उसमें उतरने लगता है। और पूरे जीवन में जिसने इसे साध लिया, उसे जीने कि कला आ गई। अब अधिक भागदौड़ कि कोई आवश्यकता भी नहीं रही।

निष्कर्ष : ओशो ने वाजिद के संबंध में कहा है; लिखा नहीं है; इसलिए पढ़ने में सुनने का सुख मिलता है। उन्होंने वाजिद के पदों की व्याख्या में नवीन अर्थवता भरी है। वाजिद के पदों में प्रयुक्त शब्द को बहुत गंभीरता से लिया है। एक एक पंक्ति सूत्र की तरह, एक एक शब्द अनमोल रत्न की तरह व्याख्यायित करते हुए ओशो आगे बढ़ते हैं। वाजिद के पदों में अर्थ की जो गहराई छिपी है उसे स्पष्ट करना, शब्दों में नवीन अर्थ भरना या संपूर्ण पद को ही अलग आयाम में व्याख्यायित करना ओशो की विशेषता है। पर यह नवीन अर्थ हमेशा अर्थोत्कर्ष के रूप में ही दिखाई पड़ता है। कुछ वाक्यों में निहित अर्थों का शीर्षासन करवाने में भी ओशो सक्षम हैं। उनकी व्याख्या माया ध्यान, प्रेम, परमात्मा के इर्द गिर्द घुमती है जो एक संत के लिए जरूरी भी है। उनके आश्रम में लोग ध्यान के लिए आते थे इस कारण संत कवियों के पदों की व्याख्या में आध्यात्मिक ऊँचाई और ध्यान की महक सर्वत्र व्याप्त है।

संदर्भ सूची:

1. हरि, वियोगी, संत सुधा सार,उद्योगशाला प्रेस, संस्करण 1953, पृष्ठ संख्या 552

---

[12] ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 242

[13] ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 249

2 . ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 3

3. हरि, वियोगी, संत सुधा सार,उद्योगशाला प्रेस, संस्करण 1953, पृष्ठ संख्या 552

4. ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 7

5. ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 7

6. ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 9

7. ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 7

8. ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 26

9. ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 57

10.ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 105

11. ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 185

12.ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 242

13. ओशो, कहै वाजिद पुकार, दिव्यांश पब्लिकेशन, संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 249

****